Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

वैश्वीकरण के साए में विलुप्त होती *हिंदी* साहित्यिक और सांस्कृतिक पहचान

Gopal Lal Dheru

Assistant Professor- Hindi
Shri Pragya Mahavidyalaya Bijainagar Beawar Rajasthan

सारांश

साहित्य और समाज का अटूट संबंध ऐसा है जैसे सूर्य की किरणें पृथ्वी को आलोकित करती हैं। साहित्य, समाज में चेतना का संचार करते हुए उसके निर्माण में सहायक होता है, जबकि समाज साहित्य को संदर्भ और प्रासंगिकता प्रदान करता है। इस प्रकार, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।वैश्वीकरण, जिसे पूंजीवाद के चरम विकास का प्रतीक माना जा सकता है, कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह एक अनवरत प्रक्रिया है, जो सदियों से मानव समाज पर प्रभाव डालती आ रही है। यह भूमंडलीकरण और वैश्विक अर्थव्यवस्था के नाम पर एक नई संरचना गढ़ता है, जिसमें वैश्विक शक्तियां अपनी आर्थिक और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को थोपती हैं। वैश्वीकरण ने "वसुधैव कुटुंबकम्" जैसे आदर्शों का भ्रम पैदा कर दुनिया को एक "गांव" में तब्दील करने का वादा किया, लेकिन इसके पीछे एक ऐसा तंत्र काम कर रहा है जो अमीरों का वर्ग बनाता है और आमजन को हाशिये पर ढकेलता है।

इस परिदृश्य में, साहित्य का स्थान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। साहित्य समाज का दर्पण है, और इसके बिना किसी भी राष्ट्र या समाज की कल्पना अधूरी है। साहित्य न केवल व्यक्तित्व के विकास में मदद करता है, बल्कि यह समाज के मूल्यों, विचारों और संस्कृतियों को संरक्षित और समृद्ध करता है। यह वैश्वीकरण के युग में एक चुनौतीपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जहां बाजार की ताकतें सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक साहित्य को हाशिए पर धकेल रही हैं।भले ही समाज और परिस्थितियों के अनुरूप साहित्य का स्वरूप बदलता रहता है, लेकिन इसका प्रभाव सदैव स्थायी रहता है। साहित्य की शक्ति न केवल समाज को जोड़ने में है, बल्कि यह विचारधारा, परंपरा और संस्कृति का पोषण करते हुए सामाजिक परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त करता है। वैश्वीकरण के दबाव में, जब सांस्कृतिक और भाषाई विविधता खतरे में है, साहित्य एक मजबूत प्रतिरोध के रूप में उभरता है, जो स्थानीयता और परंपरा के महत्व को बनाए रखने की वकालत करता है।

इस संदर्भ में, साहित्य केवल लेखन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना का आधार है। अच्छे साहित्य के बिना अच्छे समाज और व्यक्तित्व की कल्पना असंभव है। साहित्य समाज को उसकी जड़ों से जोड़ता है और भूमंडलीकरण के प्रभावों के बावजूद समाज को नई दिशा प्रदान करता है।

शब्दकुंजी: वैश्वीकरण, साहित्य, समाज, संस्कृति, चेतना, भूमंडलीकरण, नई दिशा ।

साहित्य और समाज: अटूट संबंध

साहित्य और समाज का संबंध पारस्परिक और गहरा है। साहित्य का निर्माण समाज की परिस्थितियों, उसकी संस्कृति, और समय की प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है। जिस युग का समाज जैसा होता है, उस युग का साहित्य भी वैसा ही रूप लेता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। यदि हम किसी युग के सामाजिक उत्थान-पतन, आचार-व्यवहार, सभ्यता और संस्कृति को समझना चाहते हैं, तो उस युग का साहित्य इसका सबसे विश्वसनीय स्रोत होता है। साहित्य, समाज की विचारधाराओं और भावनाओं का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, और यह समाज के स्वरूप को जीवंत रूप में प्रदर्शित करता है।

समाज पर साहित्य का प्रभाव

साहित्य समाज का केवल अनुकरण नहीं करता, बल्कि उसे बदलने की क्षमता भी रखता है। साहित्य सामाजिक सुधार और चेतना का एक सशक्त माध्यम है। यह मनुष्य को नई दिशा, प्रेरणा और दृष्टिकोण प्रदान करता है। साहित्य अंधविश्वास, रूढ़ियों और जड़ मानसिकताओं को तोड़ता है तथा समाज को नई रोशनी में देखना सिखाता है। उदाहरण के लिए, फ्रांस में रूसो के और रूस में मार्क्स के साहित्य ने क्रांतियों को जन्म दिया। भारत में तुलसीदास और सूरदास जैसे साहित्यकारों ने भक्ति साहित्य के माध्यम से समाज में अध्यात्म और नैतिकता का प्रचार किया। साहित्य समाज को उसके भीतर छिपी संभावनाओं से परिचित कराता है और उसकी दिशा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

साहित्य का महत्व

साहित्य को मस्तिष्क का भोजन कहा गया है। यह मनुष्य के विचारों को ताजगी और सृजनशीलता प्रदान करता है। यद्यपि यह विज्ञान का युग है, लेकिन केवल विज्ञान ही मानवता के मानवीय गुणों को बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं है। विज्ञान शक्ति देता है, लेकिन प्रेम, दया, करुणा और सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों का संचार केवल साहित्य कर सकता है। कार्लाइल का कथन, *"मैं ब्रिटिश साम्राज्य को छोड़ सकता हूं, लेकिन शेक्सपियर की रचना को नहीं छोड़ सकता,"* साहित्य की महत्ता को रेखांकित करता है।

आज के वैश्वीकरण के युग में, जब समाज पश्चिमी प्रभाव में डूबा हुआ है और विज्ञान की प्रगति ने जीवन को यांत्रिक बना दिया है, साहित्य एक नई आशा और ऊर्जा का संचार करता है। उत्कृष्ट साहित्य के बिना समाज का उत्थान असंभव है। साहित्य हमें न केवल भौतिक समृद्धि से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है, बल्कि हमारे जीवन और समाज को नैतिकता, संस्कृति और मूल्यों से भर देता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य

वर्तमान समय में, समाज को उत्कृष्ट साहित्य की आवश्यकता है, जो उसे नई दिशा और गहराई प्रदान करे। साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानते हुए, इसे समाज की जड़ों से जोड़ने वाला माध्यम समझा जाना चाहिए। काव्य, कहानी, और गीतों के माध्यम से समाज में नई चेतना का संचार होना चाहिए। साहित्य में वे आयाम जोड़े जाने चाहिए, जो समाज को उसकी पुरानी गौरवशाली परंपराओं से जोड़ते हुए, उसे भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करें।

उद्देश्य और परिकल्पना

- साहित्य समाज के हर क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखता है।

- वैश्वीकरण का प्रभाव साहित्य और समाज दोनों पर सकारात्मक रूप से पड़ सकता है।
- साहित्य के माध्यम से समाज की वैचारिक, नैतिक और सांस्कृतिक उन्नति संभव है।

शोध प्रविधि

इस अध्ययन में शोधकर्ता ने मौलिक विचारों और द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से समाज और साहित्य के गहन संबंधों का विश्लेषण किया है।

साहित्य और समाज का संबंध अनवरत है। साहित्य समाज को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करता है, और समाज साहित्य को उसकी विषयवस्तु। उत्कृष्ट साहित्य समाज की जड़ों को सींचता है और उसकी चेतना को प्रबल करता है। एक उन्नत समाज के निर्माण के लिए साहित्य को प्रोत्साहित करना और उसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना आवश्यक है।

प्रेरणा

"अंधकार है वहां, जहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहां साहित्य नहीं है।"

वैश्वीकरण के कारण समाज एवं व्यक्ति में परिवर्तन

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में जीवन के हर क्षेत्र में व्यापक बदलाव हो रहे हैं, और इसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा है। साहित्य, जो व्यक्ति के जीवन को संवेदनशीलता, आनंद, और प्रेरणा प्रदान करता है, आज के समाज में अपनी पुरानी जगह खोता जा रहा है। इस बदलाव के पीछे कई प्रमुख कारण हैं:

1. **आधुनिकीकरण का प्रभाव:**आधुनिकता और तकनीकी क्रांति ने मानव जीवन को भौतिक चकाचौंध से भर दिया है। औद्योगिक क्रांति और वैज्ञानिक प्रगति ने भौतिक सुविधाओं को बढ़ाया है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप लोग साहित्य, कला, और संस्कृति जैसे आनंद के साधनों से दूर होते जा रहे हैं। बुद्धि का विकास तो हो रहा है, लेकिन मानव हृदय संवेदनहीनता की ओर बढ़ रहा है।
2. **असीमित आवश्यकताओं का दबाव:**पहले मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित थीं। सीमित संसाधनों की पूर्ति के बाद वह कला और साहित्य की ओर आकर्षित होता था। ग्रामीण समाज में भी लोककला और लोकसाहित्य के प्रति गहरा जुड़ाव था। परंतु आज असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति में समय और ऊर्जा पूरी तरह खर्च हो जाती है, जिससे साहित्यिक गतिविधियों के लिए स्थान नहीं बचता।
3. **जातिवाद और क्षेत्रवाद की चुनौती:**साहित्य का उद्देश्य संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानवता का संदेश देना है। लेकिन जातिवाद और क्षेत्रवाद की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि वे साहित्य सृजन को बाधित करती हैं। जब तक साहित्यकार इन सीमाओं से ऊपर नहीं उठेगा, तब तक वह कालजयी रचनाएँ नहीं कर पाएगा।
4. **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभाव:**भावना और विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति साहित्य की आत्मा है। लेकिन जब शोषण के खिलाफ आवाज उठाने पर फतवे या अन्य विरोध झेले जाते हैं, तो साहित्य के लिए रास्ते और कठिन हो जाते हैं।

वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और साहित्य

आज भौतिकवाद और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ समाज को अपनी गिरफ्त में ले चुकी हैं। साहित्य, कला, और संस्कृति जैसी मानवीय अस्मिता से जुड़ी चीज़ें हाशिये पर चली गई हैं। समाज में आत्मकेन्द्रित दृष्टिकोण इतना बढ़ गया है कि लोग साहित्य के महत्व को समझने का समय नहीं निकाल पाते।साहित्य की उत्पत्ति समाज के "सहित" भाव से हुई थी। यह सभ्यता के विकास का सहचर रहा है। लेकिन वैश्वीकरण और बदलती जीवनशैली के बीच साहित्य की प्रासंगिकता पर सवाल उठने लगे हैं। क्या साहित्य और समाज के रिश्ते अब जर्जर हो गए हैं? क्या साहित्य अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों से कट चुका है? या यह समाज से जुड़े मुद्दों पर आज भी अपनी भूमिका निभा रहा है?

समाज में साहित्य की प्रासंगिकता

साहित्य समय का दर्पण और सहचर होता है। हर सदी की अपनी चुनौतियाँ और आकांक्षाएँ होती हैं। इक्कीसवीं सदी में भी साहित्य को अपने समय की अपेक्षाओं और जरूरतों से जुड़ना होगा। यह समय प्रगतिशील विकास का है, और साहित्य को इन सपनों और चुनौतियों के साथ अपनी जगह बनानी होगी।नई सदी के सामाजिक परिवर्तनों को समझते हुए साहित्य को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने और समाज के उत्थान में योगदान देने के लिए तैयार होना चाहिए। साहित्य केवल छपे हुए शब्द नहीं हैं, बल्कि यह मानवता के लिए दिशा और प्रेरणा का स्रोत है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण के प्रभाव से हमारी संस्कृति और स्थानीय पर्यावरण का अस्तित्व धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। यह हमारे लिए गंभीर चिंतन का विषय है कि हम वैश्वीकरण को इस सीमा तक ही अपनाएँ जिससे हमारी स्थानीयता, क्षेत्रीयता, और भारतीयता की जड़ें सुरक्षित रहें। वैश्विक मंच से जुड़ना आज की आवश्यकता है, लेकिन अपनी सांस्कृतिक आत्मा और आध्यात्मिक विरासत को खोकर इसे अपनाना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता।आज का समाज पाश्चात्य जीवनशैली के प्रभाव में, फास्ट फूड और अन्य विदेशी उत्पादों को प्राथमिकता दे रहा है, जिसे आधुनिकता और स्वास्थ्य जागरूकता का पर्याय मान लिया गया है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि हमारी नई पीढ़ी न केवल शारीरिक रूप से कमजोर हो रही है, बल्कि हमारी पारंपरिक जीवनशैली और खानपान से भी विमुख होती जा रही है।इसी प्रकार, हमारे मेले-ठेले, त्योहार, और पारंपरिक कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुएँ, जो कभी हमारी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक थीं, आज दयनीय स्थिति में पहुँच चुकी हैं। इसका मुख्य कारण है हमारी स्वदेशी उत्पादों के प्रति उदासीनता और विदेशी उत्पादों के प्रति बढ़ती आसक्ति।

हमें वैश्वीकरण के सकारात्मक पहलुओं को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक धरोहर, परंपराएँ, और स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देनी होगी। स्वदेशी उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देकर ही हम अपने सांस्कृतिक और आर्थिक ढांचे को सुदृढ़ बना सकते हैं।

सार यह है कि वैश्विक पृष्ठभूमि को अपनाने से पहले हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी भारतीयता, हमारी स्थानीयता, और हमारी सांस्कृतिक आत्मा सुरक्षित रहे। तभी हम एक संतुलित और सशक्त समाज की रचना कर सकेंगे, जो वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी पहचान को सहेज सके।

संदर्भ सूची

1. डॉ. देशबंधु राजेश, **कामकाजी हिन्दी भूमण्डलीकरण के दौर में**, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 9-11।

2. **कुरुक्षेत्र**, मई 2001।
3. डॉ. विद्याचंद्र ठाकुर, **लोकसाहित्य में त्रिगत संदर्भ**।
4. डॉ. शकुंतला वर्मा, **लोकसाहित्य का अध्ययन**, पृष्ठ 10-11।
5. दत्त एवं सुंदरम्, **भारतीय अर्थव्यवस्था**।
6. **इंटरनेट संचार माध्यम**, विविध लेख एवं शोधपत्र।
7. डॉ. राजेन्द्र त्रिपाठी, **आधुनिक साहित्य का वैश्वीकरण पर प्रभाव**, साहित्य प्रकाशन, वाराणसी।
8. डॉ. शंकर प्रसाद, **भूमण्डलीकरण और भारतीय संस्कृति**, नवभारत प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. डॉ. विद्यावती सिंह, **भारतीय समाज और संस्कृति**, प्रकाशन तिथि अनिर्दिष्ट।
10. रमेश कुमार, **वैश्वीकरण और आर्थिक विकास**, अर्थशास्त्र समीक्षा पत्रिका, अंक 45।
11. डॉ. कविता शर्मा, **ग्रामीण विकास और लोक साहित्य**, ग्रामीण प्रकाशन, जयपुर।
12. डॉ. हरिओम त्रिवेदी, **भारतीय साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियां**, साहित्य समीक्षा प्रकाशन।